यु.जी.सी. द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग

विविध विधाओं के संदर्भ में

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

विभागाध्यक्ष एवं निदेशक,
हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

डॉ. एल. पी. लमाणी

इन्टरनैशनल पब्लिकेशन

कानपुर (उ.प्र)

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"
(Collective Essays Presented at International Conference on "FARMERS AND LABOURS STRUGGLES IN THE CONTEMPORARY HINDI LITERATURE")

प्रधान संपादक - प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : इन्टरनैशनल पब्लिकेशन, कानपुर (उ.प्र)

मुद्रक : श्री रेणुका प्रेस, लाईन बजार, धारवाड.

वर्ष : 2017

पृष्ठ : 667+VIII

ISBN : 978-81-928158-6-2

मूल्य : ₹ 850/-

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगे ही ऐसा नहीं है ।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

अनुक्रमणिका

1	जो विश्व का पेट भर के भी भूखा है	प्रो. वेदप्रकाश वटुक-क्यालिफोर्निया	1
2	श्रम-साधक	डॉ. महेश 'दिवाकर'	5
3	समकालीन हिन्दी कविता : संदर्भ किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. गोवर्धन बंजारा	9
4	समकालीन हिंदी फिल्म:किसान एवं मजदूर वर्ग	डॉ. ईश्वर पवार	21
5	समकालिन कविता में किसान तथा श्रमिक वर्ग	प्रो. प्रतिभा मुदलियार	24
6	समकालीन हिन्दी प्रमुख कहानियों में आदिवासी एवं श्रमिक वर्ग का जीवन परिदृश्य	प्रो. एस्. के. पवार	30
7	समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त किसान जीवन	डॉ. प्रभा भट्ट	35
8	समकालीन हिन्दी सहित्य में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. एल. पी. लमाणी	39
9	समकालीन हिन्दी उपन्यास : किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. अमर ज्योति	42
10	समकालीन हिन्दी नाटकों में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ० ताठ एस० पवार	46
11	समकालीन हिन्दी नाटकों में श्रमिक वर्ग की संवेदना	डॉ. नागरत्ना एन. राव	52
12	अन्तरजालपर प्रकाशितसमकालीन हिन्दी कविताओं में मजदूर चेतना	डॉ संजय नाईनवाड	56
13	प्रसादोत्तर कालीन नाटकों में किसान एवं मजदूर	डॉ. राहुल उठवाल	62
14	समकालीन हिंदी उपन्यासों में मजदूर विमर्ष	डॉ. हिंदुराव आर. घरपणकर	67
15	"समकालीन हिन्दी उपन्यास : किसान एवं श्रमिक वर्ग"	Dr. M. A. Lingsur.	70
16	विजेंद्र की कविताओं में चित्रित कृषक तथा श्रमिक : एक मानवीय संवेदना	डॉ. बी. एल्. गुंडूर	73
17	फिल्म-काला पत्थर में मजदूर	डॉ. सैराबानु एम्. नवलगुंद	76
18	समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में किसानों का जीवन – संघर्श	डॉ.आढाव अर्चना कांतीलाल	79
19	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक का आर्थिक जीवन ।	डॉ. चंद्रशेखर लमाणी	84
20	नागार्जुन के 'बलचनमा' और 'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यासों में किसान-जागरण एवं वर्ग-संघर्ष	डॉ. ममता के. टी	90
21	हिंदी की प्रमुख दलित आत्मकथाओं में मजदूरों का संघर्श	डॉ.भारत श्रीमंत खिलार	93
22	समकालीन हिंदी कविताओं में किसान मजदूरों का जीवन संघर्श	डॉ. सुगंधा घरपणकर,	97
23	समकालीन हिंदी काव्य – किसान व मजदूर / श्रमिक वर्ग	श्रीमती निशा मेश्राम	101
24	शिवमूर्ति के उपन्यास में अभिव्यक्त किसान संघर्ष	अमित कुमार	105
25	'फाँस' के जाल में 'किसान'	डॉ. नीलांबिके पाटील	108

54	समकालीन हिंदी कविता में किसान जीवन का यथार्थ	प्रा. मारोती यमुलवाड	209
	उशा प्रियंवदा के उपन्यासों में श्रमिक एवं कामकाजी	डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव	211
55	महिलाओं का चित्रण		
	'धार' उपन्यास में श्रमिक वर्ग का जीवन संघर्ष	डॉ. संतोष विजय येरावार	215
56	"नरक कुंड में बास" उपन्यास में चित्रित श्रमिक जीवन	डॉ. साताप्पा शामराव सावंत.	218
57	समकालीन कविताओं में मजदूरों की त्रासदी	डॉ. शीला भास्कर	222
58	समकालीन हिन्दी कहानी में किसान और	डॉ. शिवगंगा रंजणगी	225
59	मजदूरों की कथा-व्यथा		
60	प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. एम.एस. वीरघंटिमठ	227
61	'पुरस्कार' कहानी में चित्रित किसान वर्ग का संघर्ष	Dr.Hasankhan K Kulkarni	230
62	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में श्रमिक वर्ग का संघर्ष	डॉ. कस्तूरी. पी. बिक्कणवर	233
63	केदारनाथ अग्रवालजी के काव्य में किसान एवं मजदूर वर्ग	Smt. Rekha A Kulkarni	235
64	समकालीन उपन्यास और किसानों का जीवन-संघर्ष	डॉ.परशुराम.ग.मालगे	238
65	डॉ. श्री आरिगपूडि के उपन्यासों में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. सलमा शाहीन	241
66	समकालीन हिंदी कविता में किसान और श्रमिक वर्ग के जीवन का यथार्थ	डॉ. संजय प्रसाद श्रीवास्तव	244
67	समकालीन हिन्दी नाटकों में किसान वर्ग का चित्रण	डॉ. बालाजी बळीराम गरड	247
68	नवपूँजीवादी दौर में बेदखल होते किसान, श्रमिक एवं मजदूर	सुश्री. जयश्री पाटील	251
69	समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण चेतना	डॉ. कविता वि. चांदगुडे	254
70	बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों में श्रमिक जीवन	डॉ. प्रेमचन्द चव्हाण	257
71	अशोक वाजपेयी के काव्यों में किसान और मजदूर	डॉ.राजकुमार एस. नाईक	260
72	समकालीन उपन्यास 'धरती धन न अपना' में किसान वर्ग	श्री.रमेश क. पर्वती	262
73	हिन्दी साहित्य में किसान और मजदूर	प्रो.जि.आर.सर्वमंगला	264
74	केदारनाथ अग्रवाल की कवितओं में चित्रित श्रमिक एवं किसान वर्ग	सतीश भास्कर	267
75	समकालीन हिंदी उपन्यासों में कृषक-जीवन	प्रो. एन. सत्यनारायण	269
76	मलखान सिंह के हिंदी कविता संग्रह 'सूनो ब्राह्मण' में चित्रित दलित मजदूर	प्रा. गोरख निळोबा बनसोड	272
77	मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में श्रमिक वर्ग	छायाकुमारी	276
78	बाल श्रमिक व किसानों की दशा से जुड़ा यथार्थवादी नाटक ! जादू का कालीन	डॉ.वी.पार्वती	279

समकालीन हिंदी कविता में किसान जीवन का यथार्थ

प्रा. मारोती यमुलवाड

समकालीन हिंदी कविता में किसानों के जीवन का यथार्थ एवं सूक्ष्म चित्रण हुआ है। भारत कशपि प्रधान देश है। भारत की खेती-बारी मौसम पर निर्भर है। इसलिए वाढ, सूखा आदि के आने पर किसानों की खेती नष्ट हो जाती है। भारत के अधिकांश किसान गरीव और अशिक्षित हैं। गाँव में रहनेवाले किसान खेती-वारी करके अपनी आजीविका चलाते है। खेती हमारे देश की प्राण और संस्कशति के सरोकार भी रही है। किसान हर परिस्थिति से हार न मानकर उदास और निराश न होकर भूखे रहने पर भी अपनी भुजाओं पर अटूट विश्वास करते हैं। कश्पकों के खून-पसीना वहाने से ही लोगों को अन्न नसीव होता है।

किसानों को अपनी खेती का फल कभी नहीं मिलता है। अगले साल खेती करने के लिए उनको महाजनों से ऋण लेना पडता है। अंत में ऋण के बोझ से जीवन विताना पडता है। अगले वार भी फसल अच्छी न होने के कारण वे लोग अपने गाय-वैल महाजनों को वेचते हैं। अत में उन्हें अपना खेत भी वेच`देना पडता है। किसानों की यही नियति है। किसानों की इस विवशता को एकांत श्रीवास्तव ने 'कन्हार' में यों वयान किया है-

"कभी देखो, महाजनी की महीन पैंतरेवाजियाँ

. . . . . .

और उसकी मिट्टी से लिपटकर रोता हुआ किसान"१

किसान कभी हार मानने के लिए तैयार नहीं है। जितेंद्र श्रीवास्तव ने 'जो जानते हैं कछार को' कविता में किसानों की उम्मीद को इस प्रकार व्यक्त किया है-

"ये वही किसान हैं कछ़र के

. . . . . .

हर वार वीज के साथ वोते हैं उम्मीद भी।"२

भारत कशपि प्रधान देश होते हुए भी भारत में किसानों की स्थिति वहुत दयनीय हो गई है। आज गरीव किसान लगातार ऋण लेता रहता है और किसान ऋणजाल में फँसकर आत्महत्या कर रहे हैं। उमाशंकर चौधरी ने भूमिहीन किसानों की दर्दनाक वास्तविकता को 'कहते है तव शहंशाह सो रहे थे' कविता में अभिव्यक्त किया है -

"वह वूढा किसान

. . . . . .

गले में फन्दा"३